आत्मा में आनन्द मनाना

बाबा मुक्तानन्द की सिखावनियाँ

II

सागर के बीच, पानी की एक बूँद को चारों ओर पानी के सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता। उसी प्रकार, एक भक्त हर जगह भगवान को ही देखता है और हर्षित होता है।

कोई कैसे ऐसी दृष्टि और ऐसे आनन्द को प्राप्त करे? इस प्रकार 'उसके' दर्शन करने के साधन हैं--अनवरत भजन करना और प्रेमपूर्ण सेवा करना जो बुद्धि, अहंकार और इन्द्रियों के साथ-साथ सम्पूर्ण हृदय व मन को प्रियतम में लीन कर देने से सम्भव होते हैं।

शाश्वत आनन्द ही अन्तिम प्राप्ति है।

स्वामी मुक्तानन्द, प्रशान्ति से स्पन्दित [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१४] फ़रवरी ७।

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।